1857 के राष्ट्रीय स्वातंत्र्य संग्राम के 150 वर्ष

इन दिनों राष्ट्र १८५७ के राष्ट्रीय स्वातंत्र्य संग्राम की १५०वीं वर्षगांठ मना रहा है, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ लड़ा गया था। वर्ष १८५७, विदेशी सत्ता के खिलाफ जनता के अनवरत संघर्ष व अतुल पराक्रम का प्रतीक है। सच तो यह है कि १८५७ का समर राष्ट्रीय भावना के प्रबल उबाल की स्वाभाविक परिणति थी, जो विदेशी दमन के कारण बलवती हुई। शुरुआती सैनिक विद्रोह आम लोगों में फैला और सैनिक साथियों के साथ मिलकर जनता ने औपनिवेशिक शासन की जड़ें हिला दी। १८५७ का स्वतंत्रता संग्राम, उपनिवेशवाद के खिलाफ वह संघर्ष है, जिसमें फिरंगियों (अंग्रेजों) को भारत से खदेड़ने के लिए सभी वर्गों, समुदायों, जातियों ने सहयोग दिया। इसमें सभी क्षेत्रीय, भाषायी और जातीय वर्गों तथा सभी संप्रदायों ने भाग लिया था। इस संघर्ष में सैनिकों, कारीगरों और दुकानदारों ने बढ़-चढ़कर कर हिस्सा लिया।

इतिहास के स्वर्ण पन्नों का स्मरण वर्तमान में प्रासंगिक इसलिए बनता है कि उससे पैदा होने वाली चेतना से ही देश का भविष्य संजोया जाता है। हिन्दुस्तान के इतिहास के अनेक स्वर्णिम अध्याय हैं। उनका स्मरण हमेशा देशवासियों में राष्ट्रीय सोच जगाता है। यह राष्ट्रीय सोच ही देश का चरित्र तय करती है। जब-जब भी देश पर संकट आता है तो देश में अद्‌भुत एकता का माहौल देखा

जाता है। सन् १९६२, १९६५, १९७१ की लड़ाई हो या फिर सूनामी या भूकंप हो देशवासियों की स्वार्थ से ऊपर उठकर काम करने की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई पड़ती है। लेकिन, अगर यह भावना सदा ही जागृत रखनी है तो लड़ाई या नैसर्गिक आपदा की राह नहीं देखनी चाहिए। इतिहास के स्वर्णिम पन्नों का प्रासंगिक स्मरण भी इस भाव को जागृत रखेगा। इसी उद्देश्य से भारतीय जनता पार्टी ने ९ अगस्त, २००७ से १० मई २००८ तक सन् १८५७ के स्वातंत्र्य संग्राम की १५०वीं वर्षगांठ मनाने का फैसला लिया है। प्रेरणादायी अतीत का पुण्य स्मरण, देशभक्ति का आवाहन, स्वाधीनता और लोकसत्ता की प्रतिज्ञा, एकता और अखंडता की शपथ और शक्तिशाली समृद्ध भारत का संकल्प, यह सालभर चलने वाले कार्यक्रम का उद्देश्य होगा।

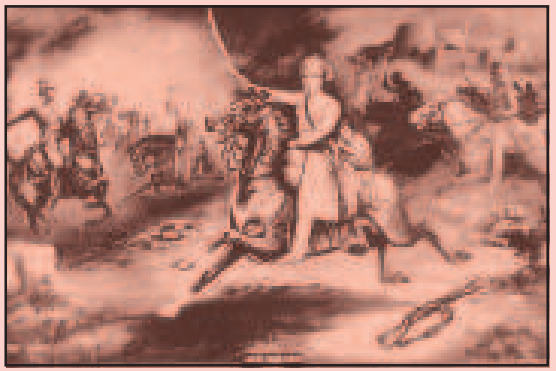

पंजाब से बंगाल तक और नेपाल सीमा से सुदूर दक्षिण तक जो लड़ाई हुई उसके स्मरण से नई चेतना देश में पैदा करने का आज एक अवसर है। दुर्भाग्य से कांग्रेस नीत यूपीए सरकार इस ऐतिहासिक अवसर को कम महत्व दे रही है। अगर सरकार चाहती तो पाकिस्तान, भारत और बांग्लादेश मिलकर इस लड़ाई की वर्षगांठ मना सकते थे। लेकिन, सरकार वीर सावरकर तथा अन्य देशभक्तों के प्रति दुर्भावना का व्यवहार रखती है, उससे यह अपेक्षा नहीं की जा सकती। सिर्फ सरकार ही नहीं, बल्कि राजनैतिक पार्टी के रूप में कांग्रेस भी मातृभूमि की रक्षा में अपने प्राणों की आहुति देने वाले क्रांतिवीरों की याद में कुछ नहीं किया। 'वंदे मातरम्' के मामले में कांग्रेस ने राष्ट्रीय अस्मिता के प्रति जैसा शर्मनाक समझौता किया था, वैसा ही समझौता १८५७ की १५०वीं वर्षगांठ में भी देखने को मिला। कांग्रेस का यह रवैया आसानी से समझा जा सकता है। ऐसा सब कुछ वामपंथियों को खुश करने की राजनीतिक विवशता के कारण हुआ, जिसके समर्थन पर सरकार टिकी हुई है। हमेशा से ही साम्यवादी दल १८५७ के महान राष्ट्रीय समर और उस दौरान पनपी राष्ट्रीय भावना को नकारते रहे हैं, जो विदेशी सत्ता को उखाड़ने के लिए एकजुट हुई थी। जबकि वीर सावरकर अपनी पुस्तक 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम' में कहते हैं, 'यह

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

युद्ध विदेशी शासन के खिलाफ एक राष्ट्रीय संग्राम था और इसने राष्ट्रीय भावना को मजबूत किया।' आर. पी दत्ता, जो भारत के साम्यवादियों के विचारक-सिद्धांतकार थे, अपनी पुस्तक 'आज का भारत' में लिखते हैं, '१८५७ का विद्रोह मरती हुई सामंती शक्तियां जो पहले देश की शासक थीं, का अंतिम प्रयास था... इस दृष्टि से सामंती शक्तियां अंग्रेजी शासन के लिए अब खतरा नहीं थीं, बल्कि जागरूक होती जनता के रास्ते में मुख्य बाधा थीं।' इतना ही नहीं, कांग्रेस-नीत संप्रग सरकार तथा प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह से और क्या उम्मीद की जा सकती है कि जिस विदेशी शासन ने कई शताब्दियों तक भारत को लूटा-खसोटा, उसी औपनिवेशिक शासन के २०० वर्षों को माननीय प्रधानमंत्री देश के लिए बहुत हितकारी मानते हैं। दरअसल, यह मैकाले-मार्क्सवादी मानसिकता है, जो देश में स्वतंत्रता व राष्ट्रवाद की ज्योति जलाने वाले अमर सेनानियों के महान त्याग को नकारती है।

इस पुस्तिका में बैरकपुर में मंगल पांडे द्वारा पहली गोली चलाने के बाद मेरठ से शुरू हुई यह लड़ाई जो दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, रूहेलखंड, बरेली, झांसी, बनारस, इलाहाबाद, असम, कलकत्ता, मद्रास, चिंगलपुट, अरकाट, कालीकट, कोचीन, पटना, दानापुर, जगदीशपुर, मेवात, गुड़गांव, नसीराबाद, भरतपुर, सतारा, कोल्हापुर, अहमदनगर, रत्नागिरी, बीजापुर, हैदराबाद, करनूल, विशाखापटनम, कारवार, मैसूर गोवा, पांडिचेरी तक पहुंची, इसका तथ्यों पर आधारित वर्णन है। जनता को सन् १८५७ के स्वातंत्र्य संग्राम की याद दिलाने के लिए यह पुस्तिका उपयुक्त रहेगी।

अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा भारत के अधिकांश हिस्सों पर कब्जा करने तथा अनेक भारतीय शासकों पर अपनी प्रभुसत्ता थोपने के प्रयास के बाद १८५७ का राष्ट्रीय स्वातंत्र्य संग्राम प्रारम्भ हुआ। १७५७ में प्लासी की लड़ाई में ईस्ट इंडिया कंपनी ने राबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में बंगाल के तत्कालीन नवाब सिराजुद्दौला को हराया। सिराजुद्दौला को हराने में राबर्ट क्लाइव की मदद करने वाला मीर जाफर बंगाल का नवाब बना और क्लाइव बंगाल का गर्वनर। सत्ता पर पकड़ बनाए रखने के लिए बंगाल षड्यंत्र का

केंद्र-बिंदु बन गया। ब्रितानियों ने बड़ी मात्रा में प्रतिस्पर्धी पार्टियों से घूस लिया व हरजाने के तौर पर काफी मात्रा में धन भी उगाहे। १७६४ में बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों की जीत हुई और शाह आलम द्वितीय ने कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा के दीवानी अधिकार प्रदान किए। १८०३ में लार्ड लेक ने सिक्ख और मराठा की संयुक्त कमान को तत्कालीन दिल्ली की बाहरी सीमा पटपड़गंज के युद्ध में हराकर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। अंग्रेजों द्वारा बनाया गया युद्ध स्मारक नोएडा के गोल्फ कोर्स के एक किनारे पर आज भी मौजूद है। मुगल शासक शाह आलम द्वितीय अंग्रेजों के संरक्षण में आ गए, जो पहले मराठों का संरक्षण में थे। कालांतर में फ्रांसीसियों, मराठों, सिक्खों व अफगानियों को हराकर अंग्रेज भारत में सर्वाधिक शक्तिशाली सैनिक ताकत बन गए। इन सभी युद्धों में भाग्य का पलड़ा इधर-उधर लुढ़कता रहा, लेकिन अंततः विजय ब्रितानियों की ही हुई। अंग्रेज अपनी सैनिक ताकत बढ़ाते रहे और इसका इस्तेमाल वे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से देश के सभी भागों में शोषण करने के लिए किया। परिणामस्वरूप १८५७ में असंतोष का लावा फूटा और सैनिकों के साथ जनता ने ब्रितानियों के खिलाफ युद्ध का बिगुल फूंक दिया।

आज हम १८५७ के राष्ट्रीय युद्ध की १५० वर्षगांठ मना रहे हैं, इसलिए जरूरी है कि उन ऐतिहासिक घटनाओं पर एक बार फिर से नजर डालें :

मुख्य घटनाएं

- **२९ मार्च १८५७:** कलकत्ता के निकट बैरकपुर छावनी में मंगल पांडे ने एक अंग्रेज अधिकारी की हत्या कर दी। मंगल पांडे को गिरफ्तार कर लिया गया और फांसी दे दी गई। मंगल पांडे का सर्वोच्च बलिदान राष्ट्रीय भावना को मजबूत किया और औपनिवेशिक शासकों के खिलाफ युद्ध की बिगुल बज उठा।
- **२४ अप्रैल १८५७: मेरठ-** तीसरी घुड़सवार टुकड़ी के सैनिकों ने चर्बी लगे कारतूस का इस्तेमाल करने से इनकार कर दिया। उनमें से ८५ सैनिकों को बर्खास्त कर जेल में डाल दिया गया।
- **१० मई १८५७:** मेरठ में सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। जेल तोड़ कर गिरफ्तार सैनिकों को मुक्त कर दिया गया। विद्रोही सैनिकों ने अंग्रेजी अफसरों की हत्या कर दी और दिल्ली की ओर कूच किया।
- दिल्ली पहुंचकर सैनिकों ने पेंशन प्राप्त मुगल शासक बहादुर शाह 'द्वितीय' को नेतृत्व करने का अनुरोध किया। बहादुर शाह 'द्वितीय' को शहंशाह-ए-हिंदुस्तान' घोषित किया गया। दिल्ली में ब्रिटिश अधिकारी की हत्या कर दी गई और अंग्रेजों के खिलाफ कार्यवाही के लिए 'प्रशासकीय

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

अदालत' की स्थापना की गई। १४ सितंबर १८५७ को अंग्रेजों ने दिल्ली पर पुनः हथियाने के प्रयास शुरू कर दिए और पांच दिनों पश्चात् २० सितंबर १८५७ को दिल्ली पर कब्जा कर लिया।

- दिल्ली पर अधिकार पाने के बाद अंग्रेजों ने भयंकर कत्लेआम किया। दिल्ली में लगभग २७ हजार व्यक्तियों को फांसी पर चढ़ा दिया गया। बहादुर शाह 'द्वितीय' के दो पुत्र और एक पौत्र को गोली मार दी गई। ब्रिटिश सैनिकों ने महिलाओं के साथ बलात्कार किया। बहादुर शाह 'द्वितीय' को गिरफ्तार कर रंगून निर्वासित कर दिया गया।
- भारतीय सैनिकों ने १ जुलाई १८५७ को लखनऊ की ब्रिटिश रेजीडेंसी पर हमला बोल दिया। संघर्ष इतना हिंसक व विस्फोटक था कि ब्रिटिश रेजीडेंट हेनरी लारेंस को नगर छोड़कर यूरोप के निवासियों तथा लगभग दो हजार सैनिकों के साथ रेजिडेंसी में शरण लेनी पड़ी। ४ जुलाई को हेनरी लारेंस मारा गया। इस संघर्ष में अवध के जमींदारों, किसानों, कारीगरों और जनता ने क्रांतिकारी सैनिकों का साथ दिया। बाद में १७ नवंबर को नए मुख्य सेनापति कालिन कैंपबेल ने गोरखा सैनिकों की मदद से नगर में प्रवेश किया। मार्च १८५८ में नगर पर अंग्रेजों का पुनः अधिकार हो गया।
- कानपुर में नाना साहेब, अजीमुल्ला खां तथा तात्या टोपे ने विद्रोही सैनिकों को संगठित किया। कानपुर के ब्रिटिश शस्त्रागार का लूट लिया गया। छावनी के कंमाडर ह्यू व्हीलर ने २७ जून को आत्मसमर्पण कर दिया।
- झांसी में ४ जून १८५७ को विद्रोह प्रारंभ हो गया। ८ जून को झांसी को स्वतंत्र घोषित कर दिया गया और रानी लक्ष्मी बाई गद्दी पर बैठीं। काल्पी में वह तात्या टोपे से मिली और ग्वालियर पर अधिकार कर लिया गया। आखिरकार, १८ जून १८५८ को झांसी की रानी बड़ी वीरता के साथ सैनिक वेष में वीरगति को प्राप्त हुईं।
- रूहेलखंड में क्रांति का नेतृत्व मौलवी अहमद शाह ने किया। लेकिन पवान के राजा जगन्नाथ सिंह के भाई ने ५०,००० रुपये के लालच में उसे धोखे से मरवा दिया।
- बरेली में संघर्ष का नेतृत्व एक वृद्ध खान बहादुर खान ने किया। उन्होंने ४०,००० सैनिकों का गठन किया तथा अंग्रेजों से लोहा लिया।
- बनारस में स्थानीय लोगों ने अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया। कर्नल नील ने कठोर दमन का सहारा लिया। सभी स्वतंत्रता सैनानियों, संदेहास्पद व्यक्तियों को फांसी पर लटका दिया गया, पर यह जन-विद्रोह जुलाई

१८५८ तक चलता रहा।

- इलाहाबाद मे ६ जून को मौलवी लियाकत अली के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध प्रारम्भ हुआ। कर्नल नील अपनी दमनकारी नीति जारी रखी और अनेक बेनुगाहों को फांसी पर लटका दिया गया। यहां तक कि अंग्रेजों ने वृद्ध महिलाओं और बच्चों को भी नहीं बख्शा। इसके अलावा आगरा, बुलंदशहर, बिजनौर, मुरादाबाद, मेरठ व अन्य स्थानों पर भी विद्रोह हुए।
- **बंगाल और असम :** इस दौरान कलकत्ता अंग्रेजी राज की राजधानी थी। दिल्ली में महासंघर्ष का समाचार सुनते ही यूरोपीयन समुदाय में भय और आंतक छा गया। भारतीय सैनिकों ने फोर्ट विलियम पर कब्जा करना चाहा, पर शीघ्र ही उसे दबा दिया गया। असम में पुरभरलों की दो पल्टनों ने अंग्रेजी शासन को चुनौती दी। अहोम राजवंश को पुर्नस्थापित करने के प्रयास को १८५८ में दबा दिया गया।

- तत्कालीन हरियाणा का अधिकतर भाग उत्तर-पश्चिम प्रांत का हिस्सा था। यहां के लोगों ने संघर्ष में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। १६ नवंबर नारसौल के समीप एक भयंकर लड़ाई हुई, जिसमें ७५ ब्रिटिश सैनिक मारे गए। मेवात में विद्रोह का नेतृत्व सदरूद्दीन ने किया। राव तुलाराम और उनके भतीजे गोपाल देव ने किसान विद्रोह में हिस्सा लिया। रोहतक, झज्जर, हिसार, दादरी, फरीदाबाद, बल्लभगढ़ व अन्य स्थानों पर भी विद्रोह हुए।
- मध्य भारत के अनेक भागों में संघर्ष हुआ। महू, सागर, बुंदेलखंड आदि स्थान पर 'मारों फिरंगी को' के नारों से प्रदेश गूंज उठा। हालांकि होल्कर और सिंधियां अंग्रेजों के साथ थे, परंतु यहां की आम जनता पूरे दिल से विद्रोह का साथ दे रही थी। ग्वालियर के २०,००० सैनिकों ने महारानी लक्ष्मीबाई के साथ अंग्रेजों से युद्ध किया।
- राजस्थान में विद्रोह की शुरूआत नसीराबाद छावनी में २८ मई १८५८ को हुई। ३ जून को यह विस्फोट नीमच में हुआ। देवली की छावनी में आग लगा दी गई। अजमेर में ५० कैदी केंद्रीय सभागार से भाग निकले। १० अगस्त को पुनः नसीराबाद की घुड़सवार सेना ने अपने कमांडर

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

के आदेश को नहीं माना। १५ अक्टूबर को कोटा छावनी में संघर्ष का बिगुल बजा। भरतपुर में भी संघर्ष हुआ।

- हैदराबाद में सोनाजी पंत, रंगाराव, पांगे, मौलवी सैयद अलाउद्दीन ने संघर्ष का नेतृत्व किया। जून १८५७ में कुछ सशस्त्र रोहिला सैनिकों ने स्वयं को निजाम का समर्थक कहते हुए निजाम के राज्य में कड़प्पा तक पहुंच गए। वे नाना साहेब की जय बोल रहे थे। गोलकुडा तथा राजमहेंद्री में विप्लव हुआ, जो गुंटूर तक फैला।
- कर्नाटक में मैसूर, कारवाड़, जमाखिंड़ी, शोरापुर, कोप्पल आदि में संघर्ष हुए। जुलाई में बंगलौर स्थित मद्रास सेना की ८वीं घुड़सवार सेना ने और अगस्त में बेलगांव में २०वीं पैदल सेना की पल्टन में अंग्रेजी जुआ उतार फेंका।

- मेरठ में हुए विद्रोह के पंजाब में दोहराए जाने के भय से अंग्रेजों ने सैनिक को निशस्त्र कर उनकी हत्या करना शुरू कर दिया। जिस भी सैनिक पर विद्रोह करने या सेना से भागने की आशंका होती थी, उसे निर्ममतापूर्वक कत्ल कर दिया गया। एक सर्वाधिक शर्मनाक अध्याय २६वीं बटालियन के २८२ सैनिकों की अमानवीय हत्या थी। अमृतसर के डिप्टी कमीश्नर कूपर द्वारा २३७ सैनिकों को १०-१० के जत्थे में मार दिया गया तथा बचे हुए ४५ सैनिक दम घुटने से मारे गए, इस घटना से 'ब्लैक होल' की याद ताजा होती है। अंग्रेजों ने प्रचार किया कि सिक्खों ने उनका साथ दिया, लेकिन सच्चाई यह है कि सतलज क्षेत्र के सिक्ख रजवाड़ों कों छोड़कर आम सिक्खों ने युद्ध में हिस्सा लिया। पंजाब में अंग्रेजी प्रशासन को सिर्फ एक साल अंदर ८००० लोगों को गिरतार करना पड़ा।
- पेशावर, चिटगांव, मद्रास और सिंगापुर में भी विद्रोह हुए।

वस्तुतः १८५७ के राष्ट्रीय स्वातंत्र्य समर का काफी महत्व है, जिसका क्षेत्र न केवल व्यापक था, बल्कि यह स्वराज, स्वधर्म, स्वदेशी और गो-रक्षा पर आधारित थी। १८५७ का संग्राम विभिन्न यूरोपीय उपनिवेशों में लड़े सभी युद्धों में सबसे बड़ा था। यह समर हिंदु-मुस्लिम एकता का भी प्रतिनिधित्व

स्वतंत्रता संग्राम 1857 150 वर्ष 2007

करता है, जो तुष्टिकरण की राजनीति पर आधारित नहीं था, बल्कि इसका आधार एक-दूसरे प्रति सम्मान व आपसी सहिष्णुता थी। आजाद हुकुमत के नाम से बहादुर शाह 'द्वितीय' ने जिस संविधान की रचना की, उसमें 'गौ-हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध' सर्वोच्च प्राथमिकताओं में एक था।

१८५७ के राष्ट्रीय स्वातंत्र्य समर में हमारी संस्कृति का प्रतीक 'कमल' और आम आदमी की मौलिक जरूरत 'रोटी' ने लोगों को क्रांति के लिए संगठित व प्रेरित किया। इस महासमर में ग्रामीण, शहरी, पहाड़ी व वनवासियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। अंग्रेजी हुकुमत इस स्वातंत्र्य समर का दमन सिर्फ अत्याचारी शासन तथा क्रांतिकारियों व बेगुनाह व्यक्तियों की हत्या करके ही दबा सकती थी।

ब्रिटिश विद्वानों ने इस समर के महत्व को कम करने की कोशिश की। इसे ऐसे स्थानीय विद्रोह की संज्ञा दी गई, जिसे कुछ विद्रोही सैनिकों का समर्थन प्राप्त था। इसे 'आखिरी सांसें' लेता सांमती व्यवस्था की अंतिम लड़ाई कहा गया। सच यह है कि इस तरह के प्रयास राष्ट्रीय भावना को कमजोर करने के लिए किए गए।

औपनिवेशिक शासन के खिलाफ इस व्यापक राष्ट्रीय स्वातंत्र्य समर के मुख्य कारण संक्षिप्त रूप से निम्न हैं:

- ईस्ट इंडिया कंपनी भारतीय शासकों पर सर्वोच्च सत्ता का दावा कर रही थी। डलहौजी की हड़प नीति द्वारा सतारा (१८४८), नागपुर, संभलपुर, बघात (१८५०) और उदयपुर (१८५३) को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया। अवध को कुशासन के आरोप में १८५६ में हड़प लिया गया।
- अंग्रेजों की लगान नीति सर्वाधिक अलोकप्रिय थी। लगान उगाहने के लिए अंग्रेज किसानों का दमन करते थे। दूसरी तरफ किसानों की हालत बहुत बदतर थी और वे भुखमरी के शिकार व जीवन से नैराश्य थे।
- ब्रिटिश आर्थिक नीति, भारतीय व्यापार व उद्योग जगत के हितों के खिलाफ थी। ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय हस्तकला और उद्योग को नष्ट करने में राजनैतिक शक्ति का इस्तेमाल किया और भारत को विदेशी शोषण व्यवस्था के उपांग के रूप में विकसित किया।
- सामान्य तौर पर ऐसा माना जाने लगा था कि अंग्रेज भारत में ईसाइयत को थोपना चाहते थे। मिशनरियों को बड़े पैमाने पर धन व भूमि मुहैया कराई गई। मूर्तिपूजा की निंदा की गई। हिंदू देवी-देवताओं का उपहास उड़ाया गया। १८३४ में, स्कूलों में बाइबिल की पढ़ाई अनिवार्य कर दी गई। सैनिकों को ईसाइयत स्वीकार करने पर तरक्की देने का आश्वासन दिया गया।

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

- गोरे और देशी सैनिकों में हमेशा भेदभाव रहता था। अधिक मेहनत के बावजूद भारतीय सैनिकों को यूरोपीय सैनिकों की तुलना में कम वेतन व निम्न स्तर की सुविधाएं मिलती थी। भारतीय सैनिकों की तरक्की रोकी गई।
- विद्रोह का तात्कालिक कारण सेना में चर्बी लगे कारतूस का इस्तेमाल था, जिसमें गौ और सुअर की चर्बी लगी थी। कारतूस को इस्तेमाल करने से पहले दांत से काटना पड़ता था। सिपाहियों ने इन कारतूसों का उपयोग करने से मना कर दिया, क्योंकि इसे वे धर्म विरोधी मानते थे।

१८५७ के राष्ट्रीय स्वातंत्र्य समर का प्रभाव बहुत दूरगामी था। १८५७ की क्रांति का ही परिणाम था कि भारतीय शासन अधिनियम १८५८ के तहत ईस्ट इंडिया शासन को समाप्त कर दिया गया और भारत का शासन सीधे ब्रिटिश सम्राट के पास चला गया। 'ब्रिटिश क्राउन' के हितों की रक्षा के लिए कई प्रशासनिक कदम उठाए गए। ब्रिटिश शासकों ने यह भी महसूस किया कि भारतीयों को धर्म, जाति, भाषा व समुदाय के नाम पर बांटने तथा हिंदु-मुस्लिम-सिक्ख एकता को नष्ट करने की जरूरत है। अतएव, अंग्रेजों ने 'बांटों और राज करो' की नीति का अनुसरण किया, जिसका रूपांतरण इन दिनों देश के तथाकथित 'धर्मनिरपेक्षवादियों की तुष्टिकरण राजनीति' में दिखाई पड़ता है।

स्वातंत्र्य समर ने जनता में राष्ट्रवादी भावना को और मजबूत किया और लोग एकता की शक्ति को पहचानने लगे और उन्हें यह भी अहसास हुआ कि अंग्रेज अजेय नहीं है। इस महासमर ने रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहेब, बहादुर शाह जफर, कुंवर सिंह व अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के अमर बलिदान को सामने लाया। इनकी शौर्य कथाएं जनता तक पहुंचकर राष्ट्रीय भावना को बलवती कीं, जो हमें आज भी प्रेरित करती हैं।

वर्ष २००७ में हम जब १८५७ के राष्ट्रीय स्वातंत्र्य समर की १५०वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, तब राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय एकता, अखंडता, संप्रभुता व स्वतंत्रता का जो संदेश १८५७ हमें देता है, वह स्वतंत्र भारत के प्रत्येक नागरिक तक पहुंचना चाहिए। एक जागृत राष्ट्र की तरह भारत को उन विंध्वसकारी तथा विभाजनकारी शक्तियों, जो हमारी प्राचीन सभ्यता को नष्ट करना चाहती हैं, से संघर्ष करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। आज जब हम १८५७ के महान क्रांतिवीरों एवं अमर शहीदों को नमन कर रहे हैं, हम पुनः एक समृद्ध, सुरक्षित एवं शक्तिशाली भारत के पुनर्निर्माण का संकल्प लेते हैं।

भारतीय जनता पार्टी

(केन्द्रीय कार्यालय)
११, अशोक रोड नई दिल्ली - ११०००१

महत्वपूर्ण परिपत्र

सादर प्रणाम,

आजादी की पहली देशव्यापी लड़ाई सन् १८५७ में लड़ी गई। स्वातंत्र्यवीर सावरकर ने इसे पहला स्वातंत्र्य समर करार दिया। भारतीय जनता पार्टी ने आज़ादी की इस पहली लड़ाई की १५०वीं वर्षगांठ को देशभर में बड़े पैमाने पर मनाने का फैसला किया है।

पार्टी अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह जी ने पार्टी के महासचिव श्री अनंत कुमार के नेतृत्व में १८५७ स्वातंत्र्य संग्राम कार्यक्रम आयोजन समिति का गठन किया है। समिति के सदस्य श्री कैलाश जोशी, श्री मुख्तार अब्बास नकवी, श्री कलराज मिश्र, श्री बलबीर पुंज, श्री प्रभात झा, श्री विजय गोयल, श्रीमती किरण महेश्वरी, श्री ओ.पी. राजगोपाल, श्री धर्मेन्द्र प्रधान, श्री अमित ठाकर, श्री श्याम जाजू और श्री प्रकाश जावडेकर है।

प्रेरणादायी अतीत का पुण्य स्मरण, देशभक्ति का आवाहन, स्वाधीनता और लोकसत्ता की प्रतिज्ञा, एकता और अखंडता की शपथ और शक्तिशाली समृद्ध भारत का संकल्प यह सालभर चलने वाले कार्यक्रम का उद्देश्य होगा।

९ अगस्त, २००७ से १० मई, २००८ तक यह कार्यक्रम चलेंगे।

१८५७ के स्वातंत्र्य संग्राम की तीन प्रमुख विशेषताएं थी। गुलामी के खिलाफ देशभर के लोगों का यह सामूहिक प्रयास था, इसमें जनता की भागीदारी खूब थी और हिन्दू-मुस्लिम एक होकर देश के लिए लड़े थे।

पंजाब से बंगाल तक और नेपाल सीमा से सुदूर दक्षिण तक जो लड़ाई हुई उसके स्मरण से नई चेतना देश में पैदा करने का एक अवसर है। दुर्भाग्य से कांग्रेस नीत यूपीए सरकार इस एतिहासिक अवसर को कम महत्व दे रही है। अगर सरकार चाहती तो पाकिस्तान भारत और बांग्लादेश मिलकर इस लड़ाई की वर्षगांठ मना सकते थे। लेकिन, जो सरकार वीर सावरकर तथा अन्य देशभक्तों के प्रति दुर्भावना का व्यवहार रखती है, उससे यह अपेक्षा नहीं की जा सकती। इसलिए भारतीय जनता पार्टी पूरे जोर-शोर से यह राष्ट्रीय गौरव के विषय को जन-जन तक ले जाएगी।

इस पृष्ठभूमि को कार्यक्रम के आयोजन में ध्यान रखना होगा।

हर प्रदेश और हर जिले में इन कार्यक्रमों के संयोजन के लिए १८५७

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com

स्वातंत्र्य संग्राम कार्यक्रम आयोजन समिति का गठन करना है। इसमें संयोजक और सह-संयोजक के रूप में प्रदेश तथा जिले के सक्रिय वरिष्ठ कार्यकर्ता की योजना हो। इसमें ५ या ११ सदस्य हो सकते है। इस समिति में महिला-युवा-अल्पसंख्यक मोर्चा के एक-एक सक्रिय सदस्य को भी रखना है। समिति में समाज के मान्यवर लोग भी जोड़ सकते है। यह समिति सभी प्रमुख नेताओं से विचार करके कार्यक्रम का खाका तैयार करेगी और उसको अमल में लाने में सक्रियता से सहयोग करेगी।

१८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के एतिहासिक महत्व के ठिकानों को चिन्हित करके विशेष कार्यक्रमों की योजना बनानी है। साथ ही अन्य सभी जिलों में मूल उद्देश्य को ध्यान में रखकर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हो सकता है। प्रभात फेरी, साइकिल रैली, मशाल जुलूस, क्रांति स्मरण चित्र प्रदर्शनी, स्कूल-कॉलेजों में निबंध तथा भाषण प्रतियोगिता, विचार-गोष्ठी, रैलियां, स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान, स्वतंत्रता स्मारकों पर विशेष कार्यक्रम, विरांगना (शहीदों की पत्नियां) सम्मान, घर-घर में संदेश-पत्र बांटना, युवाओं-महिलाओं के विशेष सम्मेलन, स्वातंत्र्य संग्राम जागृति यात्रा ऐसे अनेक कार्यक्रमों के बारे में सोचा जा सकता है।

इस सालभर में हर जिले में कम से कम एक प्रभावी कार्यक्रम हो और जनता का उसमें अच्छा सहभाग हो, इसकी चिंता करे।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु कार्यक्रम आयोजन समिति के सदस्यों को विभिन्न प्रदेशों की जिम्मेवारी दी गई है। जिसकी जानकारी इस परिपत्र के साथ अलग से दी गई है।

(अनंत कुमार)
महासचिव
भारतीय जनता पार्टी

सभी प्रदेश अध्यक्ष एवं महामंत्री (संगठन)
सभी केन्द्रीय पदाधिकारी,
सभी प्रदेश प्रभारी

1857 स्वातंत्र्य संग्राम कार्यक्रम आयोजन समिति

नाम	प्रदेश
श्री अनंत कुमार, संयोजक	
श्री मुख्तार अब्बास नकवी	बिहार, पश्चिम बंगाल
श्री बलबीर पुंज	पंजाब, चंडीगढ, केरल,
श्रीमति किरण माहेश्वरी	राजस्थान गुजरात
श्री धर्मेन्द्र प्रधान	उड़ीसा, छत्तीसगढ़
श्री ओ. राजगोपाल	आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु अंडमान निकोबार, पांडचेरी
श्री कैलाश जोशी	मध्य प्रदेश
श्री कलराज मिश्र	उत्तर प्रदेश
श्री विजय गोयल	दिल्ली, हरियाणा
श्री प्रभात झा	मध्य प्रदेश, झारखंड
श्री प्रकाश जावडेकर	कर्नाटक, महाराष्ट्र, गोवा
श्री श्याम जाजू	हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल
श्री अमित ठाकर	जम्मू कश्मीर, असम व पूर्वोत्तर राज्य

Document Produced by deskPDF Unregistered :: http://www.docudesk.com